स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा–प्रथम खण्ड

भाषा और लिपि

– डॉ॰ मुन्ना साह

भाषा और लिपि दोनों का आपस में सहसंबंध है। प्रत्येक भाषा की एक लिपि होती है। लिपि के माध्यम से हम शब्दों या कहें की अपनी अभिव्यक्ति को एक आकार देते हैं। बिना लिपि के लिखा नहीं जा सकता। वस्तुतः लिपि के द्वारा हम अपने विचार या भावनाओं को अधिक समय तक लिखकर अथवा छापकर संजो सकते हैं।

भाषा के संबंध में **भोलानाथ तिवारी** लिखते हैं कि– "भाषा, उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके माध्यम से मनुष्य परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करता है"

श्यामसुन्दर दास लिखते हैं कि– "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान–प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि–संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।"

हम कह सकते हैं कि "लिपि ध्वनि वर्ण–प्रतीकों की ऐसी व्यवस्था है जिसके माध्यम से भाषा को दृश्यात्मक रूप प्रदान किया जाता है।"

लिपि के अस्तित्व के लिए भाषा का होना आवश्यक है तथा एक लिपि अनेक भाषाओं के लिए उपयोग में लायी जा सकती है।

भाषा और लिपि

भाषा	लिपि
संस्कृत पालि हिन्दी मराठी कोंकणी	**देवनागरी**

सिंधी नेपाली अन्य	
अंग्रेजी फ्रेंच जर्मन इटैलियन पोलिश स्कॉटीश अन्य	**रोमन**
पंजाबी	**गुरुमुखी**
उर्दू (काश्मीरी) अरबी (पंजाबी) अजेरी (पाकिस्तान) अन्य	**फारसी**

इसी प्रकार भारत के अलग–अलग प्रांतों में अलग–अलग बहुत भाषाएँ हैं और उनकी लिपि भी है। जैसे– मैथिली– मिथिलाक्षर लिपि, बांग्ला– बांग्ला लिपि, गुजराती–गुजराती लिपि, इत्यादि।